

**विद्विष्ट** वि. (तत्.) निंदित, गर्हित।

**विद्वेष** पुं. (तत्.) घृणा, विरोध, गर्ह, शत्रुता, निंदा, दुश्मनी।

**विद्वेषक** वि. (तत्.) विद्वेष करने वाला, शत्रुता करने वाला, घृणा करने वाला।

**विद्वेषण** पुं. (तत्.) घृणा, शत्रु, नफरत पुं. द्वेष करना वि. दो जनों में बैर भाव उत्पन्न कराना।

**विद्वेषी** वि. (तत्.) विद्वेष, घृणा, नफरत करने वाला व्यक्ति, शत्रु।

**विद्वेष्टा** वि. (तत्.) विद्वेष, घृणा, नफरत करने वाला, शत्रु, विरोधी।

**विद्वेष्य** पुं. (तत्.) 1. जिसके प्रति घृणा, नफरत करना उचित हो 2. विद्वेष, घृणा करने योग्य व्यक्ति।

**विधंस** पुं. (तत्.) नाश, विध्वंस, शत्रुता, विनाश।

**विधंसना** पुं. (तत्.) विध्वंस करना, नष्ट करना।

**विध** स.क्रि. (तत्.) बीधना, छेद करना, चुभोना, काटना, घुसेड़ना, सम्मान करना, पूजन करना वि. (तत्.) काम करने का तरीका, विधि रीति, नियम, कानून, प्रकार बहुविध, त्रिविध पंचविध आदि।

**विध** पुं. (तत्.) ब्रह्मा, विधाता।

**विधना** पुं. (तत्.) अपने साथ लगाना, अपने ऊपर लेना, फांस लेना।

**विधना** अ.क्रि. (तत्.) विधाता, ब्रह्मा स्त्री. होनी भवितव्यता।

**विधर्म** वि. (तत्.) 'धर्म के विरुद्ध, अन्यायपूर्ण पुं. 1. पराया धर्म 2. धर्मशास्त्र के नियम के विरुद्ध, अपने धर्म के विपरीत।

**विधर्मो** वि. (तत्.) अपने धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला व्यक्ति 2. किसी भिन्न संप्रदाय से संबद्ध अथवा अनुयायी 3. अपने धर्म को छोड़ कर किसी अन्य संप्रदाय में दीक्षित।

**विधवा** स्त्री. (तत्.) वह स्त्री जिसका पति मर गया हो, पतिहीन स्त्री, रांड।

**विधवादाय** पुं. (तत्.) मरे हुए पति की धन संपत्ति का वह भाग जो उसकी विधवा पत्नी को जीवन यापन के लिए कानून से मिलता है।

**विधवापन** पुं. (तत्.) स्त्री की विधवा अवस्था, रांडापा।

**विधवाश्रम** पुं. (तत्.) विधवाओं के रहने योग्य या उनके लिए बना आश्रम।

**विधा** पुं. (तत्.) 1. रीति, ढंग, प्रकार, किस्म, संपन्नता 2. हाथी, घोड़े का खाद्य 3. छेद करना, किराया भाड़ा काव्य. साहित्य की अनेक विधाएँ, प्रकार 4. एकांकी, नाटक, निबंध, कहानी, कविता आदि।

**विधात/विधात्री** वि. (तत्.) विधान, व्यवस्था करने वाली रचने वाली, बनाने वाली जैसे- भाग्यविधात्री स्त्री. सृष्टि को रचने वाली (महाशक्ति/देवी) 2. (ब्रह्मा की पत्नी) ब्रह्माणी 3. माता, जननी।

**विधाता** वि. (तत्.) बनाने वाला, निर्माण करने वाला, सृष्टि का सृजन करने वाला ब्रह्म, विधान व्यवस्था कराने वाला, दाता, विश्वकर्मा, कामदेव, मदिरा काव्य. एक सममात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं, 14-14 पर यति होती है तथा पहली, आठवीं और पंद्रहवीं मात्राएं लघु होती हैं टि. 'विधाता' छंद को शुद्धगा भी कहा जाता है।

**विधान** पुं. (तत्.) 1. किसी कार्य का क्रमानुसार करना 2. किसी कार्य का आयोजन, संपादन, अनुष्ठान 3. सृष्टि, कानून, धर्मशास्त्र की आज्ञा वि. 1. (किसी कार्य का) आयोजन और उसकी व्यवस्था 2. (किसी वस्तु का) निर्माण, रचना 3. (धार्मिक) अनुष्ठान 4. नियम 5. शास्त्र में वर्णित रीति या शास्त्र की आज्ञा जैसे- धर्मशास्त्र के विधान के अनुसार चलना 6. निर्दिष्ट या बताई गयी रीति, ढंग तरीका जैसे- मेरे विधान से ही तुम्हारा लाभ होगा 7. उपाय/तरकीब जैसे- कष्ट को दूर करने का विधान करना होगा, सोचना होगा 8. शासन के द्वारा बनाया गया या लागू किया गया कोई कानून जिसमें नियम